

मछली पालन की तैयारी

मछली हेतु तालाब की तैयारी बरसात के पूर्व ही कर लेना उपयुक्त रहता है। मछलीपालन सभी प्रकार के छोटे-बड़े मौसमी तथा बारहमासी तालाबों में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसे तालाब जिनमें अन्य जलीय वानस्पतिक फसलें जैसे- सिंघाड़ा, कमलगट्टा, मुरार (ढंसे) आदि ली जाती हैं, वे भी मत्स्यपालन हेतु सर्वथा उपयुक्त होते हैं। मछलीपालन हेतु तालाब में जो खाद, उर्वरक, अन्य खाद्य पदार्थ इत्यादि डाले जाते हैं उनसे तालाब की मिट्टी तथा पानी की उर्वरकता बढ़ती है, परिणामस्वरूप फसल की पैदावार भी बढ़ती है। इन वानस्पतिक फसलों के कचरे जो तालाब के पानी में सड़ गल जाते हैं वह पानी व मिट्टी को अधिक उपजाऊ बनाता है जिससे मछली के लिए सर्वोत्तम प्राकृतिक आहार प्लैक्टान (प्लवक) उत्पन्न होता है। इस प्रकार दोनों ही एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं और आपस में पैदावार बढ़ाने में सहायक होते हैं। धान के खेतों में भी जहां जून जुलाई से अक्टूबर नवंबर तक पर्याप्त पानी भरा रहता है, मछली पालन किया जाकर अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की जा सकती है। धान के खेतों में मछली पालन के लिए एक अलग प्रकार की तैयारी करने की आवश्यकता होती है।

किसान अपने खेत से अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए खेत जोते जाते हैं, खेतों की मेड़ों को यथा समय आवश्यकतानुसार मरम्मत करता है, खरपतवार निकालता है, जमीन को खाद एवं उर्वरक आदि देकर तैयार करता है एवं समय आने पर बीज बोता है। बीज अंकुरण पश्चात् उसकी अच्छी तरह देखभाल करते हुए निंदाई-गुड़ाई करता है, आवश्यकतानुसार नाइट्रोजन, स्फूर तथा पोटाश खाद का प्रयोग करता है। उचित समय पर पौधों की बीमारियों की रोकथाम हेतु दवाई आदि का प्रयोग करता है। ठीक इसी प्रकार मछली की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए मछली की खेती में भी इन क्रियाकलापों का किया जाना अत्यावश्यक होता है

तालाब की तैयारी

मौसमी तालाबों में मांसाहारी तथा अवाछंणीय क्षुद्र प्रजातियों की मछली होने की आशंका नहीं रहती है तथापि बारहमासी तालाबों में ये मछलियां हो सकती हैं। अतः ऐसे तालाबों में जून माह में तालाब में निम्नतम जलस्तर होने पर बार-बार जाल चलाकर हानिकारक मछलियों व कीड़े मकोड़ों को निकाल देना चाहिए। यदि तालाब में मवेशी आदि पानी नहीं पीते हैं तो उसमें ऐसी मछलियों के मारने के लिए 2000 से 2500 किलोग्राम प्रति हेक्टर प्रति मीटर की दर से महुआ खली का प्रयोग करना चाहिए। महुआ खली के प्रयोग से पानी में रहने वाले जीव मर जाते हैं। तथा मछलियां भी प्रभावित होकर मरने के बाद पहले ऊपर आती हैं। यदि इस समय इन्हें निकाल लिया जाये तो खाने तथा बेचने के काम में लाया जा सकता है। महुआ खली के प्रयोग करने पर यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इसके प्रयोग के बाद तालाब को 2 से 3 सप्ताह तक निस्तार हेतु उपयोग में न लाए जावें। महुआ खली डालने के 3 सप्ताह बाद तथा मौसमी तालाबोंमें पानी भरने के पूर्व 250 से 300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से चूना डाला जाता है जिसमें पानी में रहने वाली कीड़े मकोड़े मर जाते हैं। चूना पानी के पी.एच. को नियंत्रित कर क्षारीयता बढ़ाता है तथा पानी स्वच्छ रखता है। चूना डालने के एक सप्ताह बाद तालाब में 10,000 किलोग्राम प्रति हेक्टर प्रति वर्ष के मान से गोबर की खाद डालना चाहिए। जिन तालाबों में खेतों का पानी अथवा गांठे ान का पानी वर्षा तु में बहकर आता है उनमें गोबर खाद की मात्रा कम की जा सकती है क्योंकि इस प्रकार के पानी में वैसे ही काफी मात्रा में खाद उपलब्ध रहता है। तालाब के पानी आवक-जावक द्वार में जाली लगाने के समुचित व्यवस्था भी अवदग्य ही कर लेना चाहिए।

तालाब में मत्स्यबीज डालने के पहले इस बात की परख कर लेनी चाहिए कि उस तालाब में प्रचुर मात्रा में मछली का प्राकृतिक आहार (प्लैंकटान) उपलब्ध है। तालाब में प्लैंकटान की अच्छी मात्रा करने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि गोबर की खाद के साथ सुपरफास्फेट 300 किलोग्राम तथा यूरिया 180 किलोग्राम

प्रतिवर्ष प्रति हेक्टयर के मान से डाली जाये। अतः साल भर के लिए निर्धारित मात्रा (10000 किलो गोबर खाद, 300 किलो सुपरफास्फेट तथा 180 किलो यूरिया) की 10 मासिक किशतों में बराबर-बराबर डालना चाहिए। इस प्रकार प्रतिमाह 1000 किला गोबर खाद, 30 किलो सुपर फास्फेट तथा 18 किलो यूरिया का प्रयोग तालाब में करने पर प्रचुर मात्रा में प्लैंकटान की उत्पत्ति होती है।

मत्स्य बीज संचयन

सामान्यतः तालाब में 10000 फ्राई अथवा 5000 फिंगरलिंग प्रति हैक्टर की दर से संचय करना चाहिए। यह अनुभव किया गया है कि इससे कम मात्रा में संचय से पानी में उपलब्ध भोजन का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता तथा अधिक संचय से सभी मछलियों के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं होता। तालाब में उपलब्ध भोजन के समुचित उपयोग हेतु कतला सतह पर, रोहू मध्य में तथा म्रिगल मछली तालाब के तल में उपलब्ध भोजन ग्रहण करती है। इस प्रकार इन तीनों प्रजातियों के मछली बीज संचयन से तालाब के पानी के स्तर पर उपलब्ध भोजन का समुचित रूप से उपयोग होता है तथा इससे अधिकाधिक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

पालने योग्य देशी प्रमुख सफर मछलियों (कतला, रोहू, म्रिगल) के अलावा कुछ विदेशी प्रजाति की मछलियां (ग्रास कार्प, सिल्वर कार्प कामन कार्प) भी आजकल बहुतायत में संचय की जाने लगी हैं। अतः देशी व विदेशी प्रजातियों की मछलियों का बीज मिश्रित मछलीपालन अंतर्गत संचय किया जा सकता है। विदेशी प्रजाति की ये मछलियां देशी प्रमुख सफर मछलियों से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं करती हैं। सिल्वर कार्प मछली कतला के समान जल के ऊपरी सतह से, ग्रास कार्प रोहू की तरह स्तम्भ से तथा कॉमन कार्प मृगल की तरह तालाब के तल से भाजे न ग्रहण करती है। अतः इस समस्त छः प्रजातियोंके मत्स्य बीज संचयन होने पर कतला, सिल्वरकार्प, रोहू, ग्रासकार्प, म्रिगल तथा कामन कार्प को 20:20:15:15:15:15 के अनुपात में संचयन किया जाना चाहिए। सामान्यतः मछलीबीज पाँलीथीन पैकट में

पानी भरकर तथा ऑक्सीजन हवा डालकर पैक की जाती है। तालाब में मत्स्य बीज छोड़ने के पूर्व उक्त पैकेट को थोड़ी देर के लिए तालाब के पानी में रखना चाहिए। तदुपरांत तालाब का कुछ पानी पैकेट के अन्दर प्रवेदगा कराकर समतापन (एक्लिमेटाइजेद्गान) हेतु वातावरण तैयार कर लेनी चाहिए और तब पैकेट के छलीबीज को धीरे-धीरे तालाब के पानी में निकलने देना चाहिए। इससे मछली बीज की उत्तर जीविता बढ़ाने में मदद मिलती है।

ऊपरी आहार

मछली बीज संचय के उपरांत यदि तालाब में मछली का भोजन कम है या मछली की बाढ़ कम है तो चावल की भूसी (कनकी मिश्रित राईस पालिस) एवं सरसो या मूंग फली की खली लगभग 1800 से 2700 किलोग्राम प्रति हेक्टर प्रतिवर्ष के मान से देना चाहिए।

इसे प्रतिदिन एक निश्चित समय पर डालना चाहिए जिससे मछली उसे खाने का समय बांध लेती है एवं आहार व्यर्थ नहीं जाता है। उचित होगा कि खाद्य पदार्थ बारे को में भरकर डण्डों के सहारे तालाब में कई जगह बांध दें तथा बारे में में बारीक-बारीक छेद कर दें। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बोरे का अधिकांश भाग पानी के अन्दर डुबा रहे तथा कुछ भाग पानी के ऊपर रहे।

मछलियों की निकासी

12 से 18 माह के बीच जब मछलियाँ 1-1.5 कि०ग्रा० की हो जायें तो उन्हें निकलवा कर बेच देना चाहिये।

आय-व्यय विवरण

यदि 1 हेक्टेयर के तालाब में मिश्रित मत्स्य पालन किया जाय तो मत्स्य पालन पर रू० 18000/- का वार्षिक व्यय होगा। तालाब सुधार व प्रथम वर्षीय उत्पादन निवेशों

हेतु लिये गये ऋण की किश्त रू० 10000/- का भुगतान भी यदि सम्मिलित किया जाय तो कुल वार्षिक व्यय रू० 28000/- संभावित है। 3000 कि०ग्रा० मत्स्य उत्पादन प्राप्त होगा जिसके विक्रय से रू० 54000/- की आय संभव है। इस आय में से वार्षिक व्यय रू० 28000/- को घटाने के पश्चात रू० 26000/- मात्र का शुद्ध लाभ अर्जित किया जा सकता है। मछली पालन के साथ-साथ यदि बतख पालन, शूकर पालन भी किया जाय तथा तालाब के बंधों पर केले, पपीते एवं अन्य वृक्षों का रोपण किया जाय तो अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

मिश्रित मत्स्य पालन का प्रति हेक्टेयर वार्षिक आर्थिक विवरण

(अ) वार्षिक व्यय

(क) मत्स्य पालन पर व्यय

		(धनराशि रू०)
1.	तालाब का वार्षिक किराया या पट्टे का लगान	1000
2.	पानी की व्यवस्था	2000
3.	जलीय पौधों व अवांछनीय मछलियों की सफाई	1000
4.	चूने का प्रयोग (मात्रा 250 कि०ग्रा०)	500
5.	गोबर की खाद (मात्रा 10 टन)	800
6.	मत्स्य बीज का मूल्य व यातायात पर व्यय	650
7.	रसायनिक उर्वरकों को प्रयोग (मात्रा 200 कि०ग्रा०)	1000
8.	पूरक आहार पर व्यय (मात्रा 10 कुन्टल सरसों की खली व 10 कुन्टल चावल का कना)	7000
9.	मत्स्य स्टाक की देख-भाल	3000
10.	अन्य विविध व्यय	1000
		17950

		या 18000
(ख)	तालाब सुधार व प्रथम वर्षीय उत्पादन निवेशों हेतु लिये गये बैंक ऋण की किश्त की अदायगी	1000
	कुल वार्षिक व्यय	28000
(ब)	मत्स्य उत्पादन व प्रत्याशित आय 3000 कि०ग्रा० मत्स्य उत्पादन के पाण्ड साइट पर रु० 18/- प्रति कि०ग्रा० की दर से विक्रय स्वरूप प्राप्त आय	54000
	शुद्ध लाभ वार्षिक आय-वार्षिक व्यय 54000-28000	26000
नोट :- उपर्युक्त मदों की दरें परिवर्तनशील हैं।		